20th NEW DELHI WORLD BOOK FAIR
20वां नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

मेला वार्ता 2012

शुक्रवार, 2 मार्च, 2012

अनुवाद संस्कृतियों को जोड़ता है

दो दिवसीय विचार गोष्ठी प्रारंभ

बहुसांस्कृतिक और बहुभाषी भारत देश में अनुवाद की परंपरा बहुत पुरानी है। सदियों से साहित्यिक अनुवाद के जरिए देश के विभिन्न भागों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता रहा है जिसने देश को एक सूत्र में पिरो कर रखा है। इस विधा को मजबूत करने के लिए विश्व पुस्तक मेले में 'भारतीय साहित्य या शब्दों का अंबार : भारतीय भाषाओं का अंतर्अनुवाद' विषय पर दो दिवसीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। नेशनल बुक ट्रस्ट और दिल्ली विश्वविद्यालय के भाषा और साहित्य विभाग द्वारा आयोजित गोष्ठी के उद्घाटन सत्र का स्वागत भाषण ट्रस्ट के निदेशक एम.ए. सिकंदर ने दिया। प्रख्यात लेखक सुधीश पचौरी ने उद्घाटन भाषण और बीज आलेख प्रो. के. सच्चिदानंदन ने दिया। प्रो. के. सच्चिदानंद ने कहा कि अनुवाद भारतीय साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है और इससे साहित्य को अलग नहीं देखा जा सकता। उन्होंने कहा कि अनुवाद ने उन मान्यताओं को धराशायी किया है जिसमें एक खास ग्रंथ को खास भाषा और उसको जानने वाले लोगों तक रखना ही उसकी पवित्रता समझी जाती है। संस्थागत अनुवाद कार्य पर उन्होंने कहा कि आजाद भारत में अनुवाद को देश निर्माण से जोड़ा गया और साहित्य अकादेमी और एनबीटी ने अनुवाद कार्य को बखूबी अंजाम दिया। अनुवाद की दिक्कतों को गिनाते हुए प्रो. सच्चिदानंदन ने कहा कि आज हम लगातार एकभाषी बनते जा रहे हैं जबकि अनुवाद के लिए दो या ज्यादा भाषा और संस्कृतियों में पारंगत होना जरूरी है। इस सत्र में प्रो. ए. मरियप्पन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

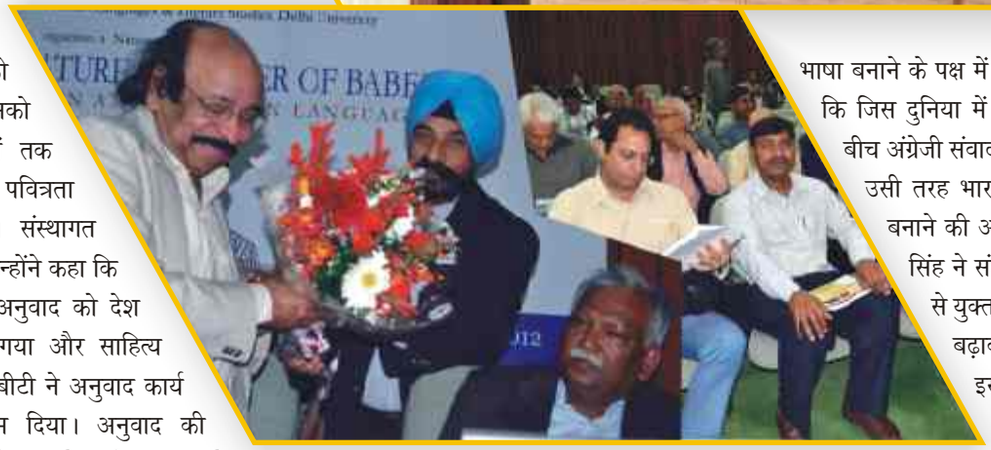

पहले सत्र 'वाणियों के बहुस्वर' की अध्यक्षता डा. टी.एस. सत्यनाथ ने की। के.के. बिड़ला फाउंडेशन के निदेशक निर्मल कुमार भट्टाचार्जी ने कई उदाहरणों के साथ बताया कि किस तरह अनुवाद का कार्य विभिन्न बोलियों और भाषाओं को करीब ले आता है। श्री अमिताभ चक्रवर्ती इस सत्र के अन्य वक्ता थे।

गोष्ठी का दूसरा सत्र 'ट्रांसलेटर एज इंटरप्रेटर' विषय पर था, जिसमें भारतीय राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता के महानिदेशक स्वप्न चक्रवर्ती ने कहा, ''आज बहुत-सा भाषा साहित्य मौखिक रूप में मौजूद है। इन भाषाओं के गानों और कविताओं के अनुवाद को बढ़ावा देने की जरूरत है।'' रवींद्रनाथ टैगोर की मिसाल देते हुए प्रो. चक्रवर्ती ने कहा कि उन्होंने अपने संगीत को कई भाषाओं में ले जाने के लिए स्कॉटिश संगीतकार ऑर्थर गिडेश को आमंत्रित किया था। परिचर्चा को प्रो. असादुद्दीन ने बेहद सहज तरीके से आगे बढ़ाया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. शिरशेन्दु चक्रवर्ती ने की।

तीसरे सत्र में प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने हिंदी को देश की 'क्लिअरिंग हाउस' या समाशोधन गृह भाषा बनाने के पक्ष में व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि जिस दुनिया में अलग-अलग भाषी लोगों के बीच अंग्रेजी संवाद का माध्यम बनती जा रही है, उसी तरह भारत में हिंदी को माध्यम भाषा बनाने की ओर अग्रसर होना चाहिए। प्रो. सिंह ने संस्कृतनिष्ठ भाषा से उर्दू-अरबी से युक्त आम बोल-चाल की भाषा को बढ़ावा देने पर जोर दिया। उनके इस मत पर कुछ श्रोताओं ने आपत्ति जताते हुए देश की क्षेत्रीय भाषाओं को संस्कृत से ज्यादा नजदीक बताया और संस्कृतनिष्ठ हिंदी भाषा में देश की माध्यम भाषा बनने की ज्यादा संभावनाएं जताईं। डा. पी.सी. टंडन की अध्यक्षता में संपन्न इस सत्र में डा. अनामिका ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस गोष्ठी के अन्य महत्वपूर्ण सत्र आज हॉल नं. 8 के सभागार में आयोजित किए जा रहे हैं।

'रूपांतरण नवनिर्माण है'

''रूपांतरण को हम नवनिर्माण कहेंगे। रूपांतरण में परिवर्तन स्वाभाविक है। वैसे का वैसे चीजों को रख देने का कोई मतलब नहीं।'' थीम पेवेलियन में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित ऑडियो-विजुअल प्रस्तुति सह चर्चा 'फिल्मों में महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियों के रूपांतरण की शैली और तकनीक' पर चर्चा करते हुए प्रभात फिल्म सोसायटी के सचिव एवं युवा फिल्म आलोचक संतोष पठारे ने यह विचार व्यक्त किया। 'शतरंज के खिलाड़ी', 'साहिब बीवी और गुलाम', 'चारूलता', 'पिंजर', 'पाथेर पांचाली', 'राशोमन' आदि फिल्मों के कुछ अंश दिखा कर उन्होंने अपनी बातों को रखा। 'मेला वार्ता' से एक अनौपचारिक संवाद में श्री पठारे ने कहा कि सिनेमा और साहित्य दो अलग-अलग माध्यम हैं, हम इन दोनों की तुलना नहीं कर सकते। दोनों माध्यमों का अपना महत्व है। हां, सिनेमा में निर्देशक चीजों को कैसे दिखाता है, यह उसकी अपनी दृष्टि है, अपनी शैली है। बातचीत में श्री पठारे ने कहा कि लेखक जो कुछ लिखता है वह उस भाषा तक सीमित रहता है, लेकिन सिनेमा के रूप में आने पर उसका दायरा व्यापक हो जाता है। जापानी फिल्म 'राशोमन' के कुछ दृश्यों को दिखा कर उन्होंने कहा कि इस फिल्म में काफी समय तक कोई संवाद नहीं है, केवल दृश्य हैं, लेकिन यही दृश्य सारे संवादों को कह देते हैं जो किताब में लिखित रूप में है। उन्होंने कुछ अन्य फिल्मों के चुनिंदा अंशों का प्रदर्शन करके कहा कि फिल्म को यह फायदा है कि वहां केवल दृश्यों में ही संवाद 'दिखला' दिए जा सकते हैं। पठारे के अनुसार, साहित्य में ऐसा संभव नहीं है। फिल्म 'चारूलता' में लगभग आठ मिनट तक कोई संवाद नहीं है, केवल दृश्य हैं, लेकिन एक दर्शक बिना संवाद के भी उस सारे परिवेश को समझ लेता है।

'परिवर्तन जहां से शुरू हो अच्छा है' - फारूख शेख

''मदारी के बंदर का शोर समझ लिया है हमने सिनेमा को, सौ साल में भी कुछ नहीं बदला'', तल्खी और रोष के साथ यह कहा प्रख्यात अभिनेता फारूख शेख ने। वे थीम पेवेलियन में 'पठन किस तरह एक अभिनेता पर असर डालता है' विषय पर अंतर्संवाद कर रहे थे। उनसे मुखातिब थे स्टार टीवी के अविनाश पांडे। सिने और पुस्तक प्रेमियों की भीड़ से भी उन्होंने बेतकल्लुफी के साथ संवाद किया। उन्होंने हंसते हुए कहा, ''जैसा आप समझ रहे हैं, मैं बहुत पढ़ा-लिखा नहीं हूं।... अपने स्कूल कॉलेज के जमाने में मैंने गालिब को पढ़ा, कबीर को भी और कालिदास को भी।''

संवाद क्रम में फारूख शेख ने साहित्य और सिनेमा, अच्छी और बुरी सिनेमा आदि अनेक बिंदुओं पर बेबाक बातें कहीं। वे बोले, ''हमने हर चीज को समाज में 'मैकडोनाल्डलाइज्ड' का दिया है। हमें हर चीज झटपट चाहिए। यह चलते-भागते खाने-पीने का दौर है। लेकिन यह अच्छी बात नहीं है।'' उन्होंने कहा कि जब हम चाट खाते हैं तो उसमें भी 'क्वालिटी' देखते हैं, तो फिर सिनेमा में क्यों नहीं। जनाब फारूख ने कहा कि खराब फिल्में बनने और चलने के लिए 70 प्रतिशत जिम्मेवारी दर्शकों की है। लेकिन हमें आशावादी होना है, नई पीढ़ी बहुत स्मार्ट है, वो देख रही है रास्ता इधर से भी जाता है। फारूख शेख ने कहा कि जब आप खराब फिल्मों को खारिज नहीं करेंगे, तब तक स्थिति में कोई सुधार नहीं होगा। फारूख शेख ने अच्छी सिनेमा के लिए दर्शकों से दवाब बनाने का आह्वान किया। वे बोले, ''परिवर्तन जहां से शुरू हो अच्छा है। हमें अपनी जिम्मेवारी समझनी चाहिए।'' उन्होंने एनबीटी से हर साल दो-तीन अच्छी क्लासिक फिल्मों पर किफायती मूल्यों पर किताबें छापने का आह्वान भी किया।

बच्चों से रूबरू हुए बाल-लेखक

बच्चों के लिए लिखने वाले कई नामचीन लेखकों को बाल मंडप में अपने पाठकों के सवालों का सामना करना पड़ा। इस कार्यक्रम में अवीक की सुश्री ईरा सक्सेना, गिरिजारानी अस्थाना, नीता बेरी, मनोरमा जफ़ा, रंजीत लाल, कुसुमलता सिंह, इंदिरा बागची और नीलिमा झा आदि ने पहले बच्चों को बताया कि वे किस तरह लिखते हैं। कुछ कहानियां भी सुनाई गईं और उसके बाद शुरू हुआ बच्चों के सवालों का सिलसिला। कक्षा आठ के छात्र प्रियांशु ने रंजीत लाल से पूछा कि वे कहानी के किरदार कहां से लाते हैं?श्री लाल का जवाब था– ''प्रकृति की कई चीजें हमें इंसानी किरदारों की याद दिलाती हैं और मैं अपने पात्र प्रकृति से ही उठाता हूं।'' एक बच्चे अक्षत ने बताया कि उसकी भी एक पुस्तक प्रकाशित होने जा रही है। ऐसे ही कई सवाल लेखकों के लिए नई कहानी की संकल्पना दे गए।

बाल मंडप में ही एक विमर्श बाल साहित्य के लेखकों और प्रकाशकों के बीच आयोजित किया गया, जिसमें एन.सी.ई.आर.टी. के सचिव आलोक वर्मा, प्रो. जी.एस. जॉली, प्रतुल वशिष्ठ, एस.के. खुराना आदि ने सहभागिता निभाई। यहां पर अच्छे बाल साहित्य को दूरस्थ अंचलों तक पहुंचाने के रास्ते में आने वाली कठिनाइयों, पढ़ने की कम होती अभिरुचि, बाल साहित्य में सामाजिक जागरूकता आदि विषयों पर विमर्श हुआ। श्री वर्मा ने ऐसे कार्यक्रमों के सतत आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया।

जर्मनी की पुस्तकें आकर्षित कर रही हैं पाठकों को

जर्मनी में आज भी किताबें पढ़ना एक सर्वाधिक लोकप्रिय शौक है। सन् 2010 में वहां लगभग 96 हजार नई पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं। विदेशी मंडप में 'जर्मन पेवेलियन' को जर्मनी के अर्थ और तकनीकी मंत्रालय द्वारा 'फ्रैंकफर्ट बुक फेयर' के सहयोग से प्रस्तुत किया गया है। यहां एवीजी', 'ब्यूत', 'एमवीबी','वर्लग अंजा कंसतमेन' जैसे 10 प्रकाशकों की 300 से अधिक नई पुस्तकों को प्रस्तुत किया गया है। ये सभी पुस्तकें जर्मन भाषा में हैं और केवल प्रदर्शन के लिए हैं।

जर्मन बुक ऑफिस, दिल्ली की परियोजना समन्वयक सोनिया ग्रोवर के मुताबिक इस विशाल स्टॉल पर आने वाले कई लोग जर्मनी की पुस्तकों के कॉपीराइट भारतीय भाषाओं में खरीदने में रुचि दिखा चुके हैं। जर्मनी की औषधि विज्ञान, उच्च शिक्षा में विज्ञान की पुस्तकें ज्यादा पसंद की जा रही हैं। यहां प्रदर्शित अब्बास खीदर की पुस्तक 'डाय आरगन देज प्रेसिडेंटेन' अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहले ही ख्याति पा चुकी है। पुस्तक के लेखक लंबे

समय तक मध्य-पूर्व एशिया के देशों की जेल में रहे। इस पुस्तक में उन्होंने इस क्षेत्र में अमेरिका के दखल व कारिस्तानी का खुलासा किया है। यह पुस्तक हिंदी में

'गलत हिंदुस्तानी' के नाम से आ चुकी है। इसके अलावा, यह अंग्रेजी, फारसी सहित कई भाषाओं में उपलब्ध है। उल्लेखनीय है कि बीते सोमवार को अब्बास खीदर जर्मन बुक ऑफिस के स्टॉल पर पाठकों से बातचीत के लिए उपलब्ध थे।

जर्मनी की पुस्तकों में बच्चों की किताबें बेहद आकर्षक और विविधतापूर्ण हैं। बहुत छोटे बच्चों के लिए खिलौनों की तरह दिखने वाली पुस्तकें हैं तो कुछ बड़े बच्चों के लिए विलियम शेक्सपियर की हेमलेट जैसी कालजयी रचनाओं को प्रस्तुत किया गया है। यहां एक स्टैंड पर पत्रिकाएं और फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला से संबंधित सामग्री भी रखी गई है। यही नहीं, यहां प्रदर्शित पुस्तकें कहां उपलब्ध हैं, इसकी जानकारी भी दी जा रही है।

पुस्तकों के लिए 'आईएसबीएन' पाएं

विश्व पुस्तक मेला के हॉल नं. 11 में जहां हिंदी के अधिकांश प्रकाशक हैं, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत राजा राममोहन राय नेशनल एजेंसी फॉर आईएसबीएन ने अपना कार्यालय स्थापित किया है, जहां केवल प्रकाशकों को ही नहीं, लेखकों को भी अंतरराष्ट्रीय मानक पुस्तक संख्या यानी आईएसबीएन प्रदान किया जा रहा है। दो अंकों की यह संख्या अपनी पुस्तक या प्रकाशन गृह के लिए प्राप्त करने के लिए आवेदक को अपना फोटो सहित पहचान पत्र प्रस्तुत करना आवश्यक है।

स्क्रीन छू कर पता करें मेले में कहां क्या है

20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला की वैसे तो कई विशेषताएं हैं, लेकिन यहां विभिन्न स्थानों पर लगाई गईं 'टच स्क्रीन' मशीनें पुस्तक-प्रेमियों को बहुत भा रही हैं। इन मशीनों द्वारा उंगली के स्पर्श-मात्र से मेला में प्रकाशकों के बारे में जानकारी, विभिन्न हॉल और कार्यक्रमों की सूचना मिल जाती है। किसी प्रकाशक विशेष को तलाशना हो या फिर किसी विषय की पुस्तक पर जानकारी या फिर प्रगति मैदान का नक्शा; टच स्क्रीन मशीनें सेवा में तत्पर हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

लाल चौक पर दिल्ली सरकार के साहित्य कला परिषद द्वारा आयोजित

श्री पूरन भट्ट द्वारा प्रस्तुत : कठपुतली कार्यक्रम।
म्यूजिक बैंड द्वारा प्रस्तुत : प्रसिद्ध सूफी संगीत।

लोकार्पण व अन्य कार्यक्रम

'कैंसर' नामक पुस्तक का लोकार्पण केनसपोर्ट की फाउंडर प्रेसीडेंट हरमाला कौर गुप्ता ने किया। यह लोकार्पण समारोह डाक्टर राक्सा.कॉम द्वारा किया गया। इस समारोह में डाक्टर राक्सा.कॉम के मुख्य संपादक डा. समीरन नंदी, आर्टमिस कैंसर सेंटर की डा. भावना सिरोही और डा. सुबोध पांडे तथा द मेडीसिटी के डा. दीपक सरीन शामिल थे। समारोह में उपस्थित अतिथियों ने कैंसर बीमारी से संबंधित कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर विमर्श किया। फ्यूजन बुक्स और डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि. ने 'अशोक चक्रधर की व्यंग्य चेतना' (डा. प्रवीण शुक्ल) पुस्तक का लोकार्पण किया। इसमें मुख्य अतिथि प्रो. नामवर सिंह, प्रो. निर्मला जैन, प्रो. अशोक चक्रधर, प्रो. केदारनाथ सिंह, वरिष्ठ कवि और पत्रकार आलोक श्रीवास्तव थे। वहीं पिजन और जनरल बुक डिपो द्वारा प्रकाशित पुस्तिका परपल सैफरॉन (वसंती विजया), एप्पल जूस फॉर सक्सेस (दीपक कुमार), फॉर ए चांस (वैभव पांडेय), द फॉलेन लव (रश्मि सिंह), सुद एंड मी (सुधीर मित्तल), हिंदी में बोलो (डा. अंजना सुधीर) दैनिक चीनी के 900 वाक्य (नॉवांग फुन्दोग) का लोकार्पण सुभाष गोयल और मनीष गुप्ता ने किया।

गुल्लीबाबा पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि. के स्टाल पर 'ए स्टार इज़ बोर्न' (निदेश वर्मा) 'प्रोजेक्टर मैनेजमेंट'(डा. यादवेंद), 'एम.ए.'(कपिला गोगिया) , 'मानव पर्यावरण'(विनय कंसल) का विमोचन दिनेश वर्मा, महेश चंद्र, सुरेंद्र गोयल द्वारा किया गया। 'अनुभव प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित एवं डा. अश्विनी पाराशर द्वारा लिखित काव्य संग्रह का विमोचन सुविख्यात आलोचक डा. रमेश कुंतल मेघ के द्वारा किया गया। वाणी प्रकाशन द्वरा प्रकाशित नरेन्द्र कोहली के तीन उपन्यासों - मत्स्यगंधा, सैरंध्री और हिडिम्बा का लोकार्पण प्रदीप सौरभ और दिविक रमेश ने किया। इसके अलावा 'कल परसों बरसों (ममता कालिया), 'मछली-मछली कितना पानी' (प्रताप सहगल) संजीव की किताब 'झूठी है तेतरी ढाढी' का भी लोकार्पण हुआ। अन्य कार्यक्रमों में यूनीक पब्लिकेशंस ने मेरीडियन कोर्स के अशोक के. सिंह के आतिथ्य में सेवा परीक्षा के संदर्भ में विचार-विमर्श प्रस्तुत किया। वहीं फ्लिपकार्ट.कॉम ने ई-बुक पर एक चर्चा प्रस्तुत की।

पुस्तक मेला की यादें रखें अपने साथ

भले ही विश्व पुस्तक मेला का समापन 4 मार्च को हो जाए, लेकिन यदि आप चाहें तो इसकी स्मृतियों को अपने साथ सहेज कर रख सकते हैं। पठन अभिरुचि के प्रोन्नयन को प्रेरित करने वाले नारों के साथ लाल, सफेद और नीले रंग की टी-शर्ट्स महज रु.150 में उपलब्ध हैं। जबकि कैप की कीमत रु.95 है। जरा सोचें, आपके पास एक ऐसा मग हो जो सुबह उठते ही गरमागरम कॉफी-चाय के साथ आपकी पुस्तक पढ़ने की आदत को दर्शाता हो! ऐसा मग पुस्तक मेला परिसर में मात्र रु.100 में खरीदा जा सकता है। इसके अलावा लोहे की अलमारी पर चिपकने वाले चुंबकयुक्त बैज रु.30 में और कॉपी-किताबों पर चिपकाने वाली नेम-चिट भी यहां खरीदी जा सकती हैं। यह सामग्री हॉल नं. 7 और 14 में उपलब्ध है।

आज के कार्यक्रम : 2 मार्च 2012, शुक्रवार

तिथि/समय	कार्यक्रम	स्थान	हॉल नं.	आयोजक
प्रातः 10 से 3 बजे	राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य या शब्दों का अंबार : भारतीय भाषाओं का अनुवाद	संगोष्ठी कक्ष	8	नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
सायं 4 बजे	कपिल सिब्बल, मा.सं.वि. मंत्री, की पुस्तक 'माई वर्ल्ड विदिन' का लोकार्पण	सभागार	8	रोली बुक्स
प्रातः 11 से 1 बजे	चर्चा-विमर्श	सभागार 1	6	यूनीक पब्लिशर्स
प्रातः 11 से 1 बजे	'बाजानामा' पुस्तक का लोकार्पण, अतिथि : पं. राजन एवं साजन मिश्रा, श्री एच.के. दुआ, श्री जवाहर सरकार, श्री अशोक वाजपेयी	सभागार 2	6	कथाचित्र प्रकाशन
दोपहर 1 से 3 बजे	प्रस्तुतीकरण	सभागार 1	6	इंडियन सोसाइटी ऑफ ऑथर्स,
दोपहर 1 से 3 बजे	पुस्तक व्यापार में सूचना एवं प्रौद्योगिकी तकनीकी के इस्तेमाल पर सम्मेलन	सभागार 2	6	स्प्रिंगटाइम सॉफ्टवेयर्स
दोपहर 1 से 3 बजे	प्रकाशन क्षेत्र में पूर्व-मीडिया सेवाओं पर संगोष्ठी	सभागार 3	14	ऑल एबाउट बुक पब्लिशिंग
अपराह्न 3 से 5 बजे	पुस्तक लोकार्पण समारोह	सभागार 1	6	प्रकाशन विभाग
अपराह्न 3 से 5 बजे	पुस्तक लोकार्पण समारोह	सभागार 2	6	अखिल विश्व गायत्री परिवार
अपराह्न 3 से 5 बजे	प्रकाशन क्षेत्र में पूर्व-मीडिया सेवाओं पर संगोष्ठी	सभागार 3	14	ऑल अबाउट बुक पब्लिशिंग
सायं 5 से 7 बजे	पुस्तक लोकार्पण समारोह	सभागार 1	6	डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि, नदि.
सायं 5 से 7 बजे	सम्मेलन	सभागार 2	6	फ्लिपकार्ट.कॉम, नई दिल्ली
सायं 5 से 7 बजे	पुस्तकों पर व्याख्यान	सभागार 3	14	आईआरएच प्रेस कं.लि., टोक्यो, जापान

बाल मंडप में आज (हॉल नं. 14)

तिथि/समय	आयोजक	गतिविधि
पूर्वाह्न 10.30 से 1 बजे	एकलव्य, भोपाल, अक्षय प्रतिष्ठान स्कूल, वसंत कुंज	माथापच्ची पोस्टर-निर्माण कार्यशाला / बच्चों द्वारा पुस्तक-समीक्षा
	नवरत्न फाउंडेशन	कुछ मशहूर बच्चों से भेंट
	जेपी पब्लिक स्कूल, ग्रेटर नोएडा	पर्यावरण संबंधी पुस्तक पर प्रहसन
दोपहर 2 से 3 बजे	डी पी एस इंटरनेशनल स्कूल, साकेत	'कैन ई-बुक्स रिप्लेस बुक्स' पर बच्चों के साथ परिचर्चा
3.30 से 5.30 बजे	विज्ञान प्रसार	दैनिक जीवन में विज्ञान के प्रयोग पर प्रस्तुतीकरण
सायं 6 से 7 बजे	कंसोर्टियम ऑक्टेट, डी.एस.बी.पी.ए.	टंबल बुक्स

थीम पेवेलियन : भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष (हॉल नं. 7)

पूर्वाह्न 11.30 से 12.30 बजे– सिनेमा, साहित्य एवं समाज : परिचर्चा, द इंटरमीडिया कॉरपोरेशन। **अपराह्न 1.30 से 3 बजे**– बातचीत : प्रख्यात निर्देशक और रंगकर्मी जब्बार पटेल के साथ फिल्म आलोचक संतोष पठारे, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया। **अपराह्न 3 से 5 बजे**– 'साहिर लुधियानवी की स्मृति में', द इंटरनेशनल मेलोडी फाउंडेशन तथा स्टार पब्लिशर्सः राज्य सभा टी वी (राजेश बादल, हरीश भल्ला)। **सायं 5:30 से 8 बजे**– फिल्म प्रदर्शन : 'सूरज का सातवां घोड़ा' (1992 हिंदी, अंग्रेजी में उपशीर्षक), धर्मवीर भारती की कृति पर प्रस्तुति, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार, पुणे के सहयोग से।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

सायं 6 से 8 बजे, **लाल चौक, प्रगति मैदान**
आयोजक : **साहित्य कला परिषद**, दिल्ली सरकार

श्री पंकज जसवानी की गज़ल प्रस्तुति।
श्री सरफ़राज़ चिश्ती की सूफियाना कव्वाली की प्रस्तुति (मुरादाबाद, उ.प्र.)।

मुख्य संपादक : **डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन'**, कार्यकारी संपादक : **पंकज चतुर्वेदी**, संपादकीय सहयोग : **दीपक कुमार गुप्ता**, उत्पादन : **देवी दीन**, सज्जा : **ऋतुराज शर्मा, सविता प्रसाद**

संवाददाता (आई.आई.एम.सी.) : **अविनाश कुमार चंचल, सुरेश बिजरणिया, पूर्वा कुमारी, विनय प्रकाश त्रिपाठी**

मेला वार्ता, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा 20वें विश्व पुस्तक मेले के लिए प्रकाशित विशेष बुलेटिन है। इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति होना आवश्यक नहीं है।

श्री एम.ए. सिकंदर, *निदेशक*
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित एवं पुष्पक प्रेस प्रा.लि., ओखला, नई दिल्ली-110 020 द्वारा मुद्रित।